In the name of Allah, the most beneficent and merciful!

भूमिका

प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के ऐसे श्रेष्ठतम एवं महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हैं जिनके साहित्य में दमन, उत्पीड़न, वैमनस्य और शोषण आदि सामाजिक बुराईयों की हर अवस्था तथा परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण और प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है। उन्होंने अपने साहित्य में उन समस्याओं और मान्यताओं को चित्रित किया है जो ज़मींदार, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग, पूँजीपति, किसान, मज़दूर व अनेक प्रकार की सामाजिक बुराई और समाज से बहिष्कृत व्यक्तियों के जीवन को संचालित करती है। प्रेमचन्द का साहित्य एक प्रकार से भारतीय मध्यवर्ग के विकास का प्रस्थान है। प्रेमचन्द का युग राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सामाजिक विषमताओं का युग था। देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, बुनियादी ढाँचे में बुरी तरह से उथल–पुथल हो चुकी थी। अंग्रेज़ों की कूटनीति व अत्याचार ने भारतीय जनता को प्रताड़ित कर रखा था तथा उनकी साम्राज्यवादी व सामन्तवादी नीतियों ने भारतीय जनता की नींदें उड़ा दी थीं। हर तरफ़ अराजकता व साम्प्रदायिकता का माहौल था जिसके द्वारा देश में बँटवारे का प्रयत्न किया जा रहा था। इन्हीं परिस्थितियों के चलते हिन्दी साहित्य जगत् में प्रेमचन्द का पदार्पण हुआ और साथ ही समाज में क्रान्ति के युग का सूत्रपात हुआ। प्रेमचन्द ने दस उपन्यास व लगभग तीन सौ कहानियों की रचना की। एक ऐसा साहित्यकार जिसके पास साधन और अवकाश की हमेशा कमी रही, उसके लिए यह एक भारी सफ़लता थी। ऐसी कठिन परिस्थितियों में दस हज़ार से भी अधिक पृष्ठ लिखना आश्चर्य की बात है।

इससे यह बात स्पष्ट है कि साहित्य सृजन के लिए उनमें अद्‌भुत प्रतिभा और लगन थी। प्रेमचन्द ने उस समय की राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक व सामाजिक विषमताओं को गम्भीरता से महसूस किया और अपने साहित्य के माध्यम से जनता के सामने प्रस्तुत किया। उनका ध्यान सदैव समाज में नवीन चेतना लाने की ओर रहा यही कारण है कि उनके साहित्य के पात्र मानवता, प्रेम, दया व राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण दिखाई देते हैं।

किसी भी युग की परिस्थितियाँ ही साहित्यकार और साहित्य को जन्म देती हैं। साहित्यकार अपने युग की परिस्थितियों से भली–भाँति परिचित होता है। वह साहित्य की रचना समाज और उस समय के वातावरण से प्रभावित होकर करता है शायद यही वजह है कि प्रेमचन्द जैसे जनोन्मुखी और प्रगतिशील साहित्यकार का पूरा साहित्य समाज और उसकी हर परिस्थितियों की यथार्थता प्रस्तुत करता है। प्रेमचन्द का समाज से सदैव गहरा सम्बन्ध रहा है। उन्होंने अपने साहित्य में समाज के सभी वर्गों को बराबर का दर्जा दिया। उनके साहित्य के पात्र झूठी कल्पनाओं में न रहकर वर्तमान की यथार्थ परिस्थितियों से बने हुए थे। प्रेमचन्द वास्तव में एक प्रगतिशील लेखक थे। मध्यवर्ग पुराने और नये आदर्शों के संघर्ष के बीच से होकर गुज़र रहा था। पाश्चात्य सभ्यता व पूँजीवादी व्यवस्था का प्रभाव समाज पर पूरी तरह से गहरा हो चुका था। पश्चिमी सभ्यता के आघात ने जीवन के आधुनिक व मध्यकालीन दृष्टिकोण के बीच एक गहरी खाई बना दी थी जिसे भर पाना बहुत मुश्किल था प्रेमचन्द साहित्य का सम्बन्ध विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज के इसी

संघर्ष से है। प्रेमचन्द की लगभग सभी कृतियाँ सम्पूर्ण मध्यवर्गीय समाज की अर्न्तकथा हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं।

उस समय के राजनीतिक, सामाजिक आन्दोलनों ने उनके कोमल मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला। उन आन्दोलनों के समय उठती अनेक परिस्थितियों को प्रेमचन्द ने पूरी तरह देखा और उसे अपनी कृतियों में चित्रित करने का सफ़ल प्रयास किया, जो कि उनकी साहित्यिक सफ़लता के रूप में आज हमारे सामने प्रस्तुत है।

मध्यवर्ग ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए लम्बे समय तक संघर्ष किया। साथ ही नवीन व्यवस्था ने उस ग्रामीण जनता के जीवन व मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला जो जाति–पाँति तथा अनेक प्रकार की सामाजिक बुराईयों के बंधनों में जकड़ी हुई थी। जैसे–जैसे वे शिक्षित होते गये और अधिक अच्छी आर्थिक सुविधाएँ प्राप्त करते गये, वे नगरों में बसने लगे, उनके मस्तिष्क का विकास हुआ, आधुनिकता की ओर रुचि उत्पन्न हुई तथा नगरों में नये–नये कार्य उनकी प्रतिक्षा कर रहे थे। वे शहरों की ओर बढ़ने लगे, आधुनिकता धीरे–धीरे अपने कदम बढ़ाने लगी, लोगों की संकीर्ण विचारधारा समाप्त होने लगीं, उपजातियाँ एक दूसरे से मिलने लगीं, अर्न्तजातीय विवाह भी होने लगे यद्यपि उनका प्रचलन अधिक नहीं था। बाल–विवाह की प्रथा का अन्त होने लगा, बच्चों का भविष्य सुधारने के लिए बाल–विवाह पर रोक एक उचित क़दम था। परस्पर खान–पान के बंधन ढीले हुए, पुराने देवी–देवताओं की मान्यता कम हुई लोग तंत्र–मंत्र विद्या से दूर हटने लगे तथा उनके समक्ष तान्त्रिकों का पाखण्ड सामने आने लगा। मध्यवर्ग की सारी ताकत

उद्योगशीलता पैदा करने और उसे पुष्ट करने में लग गई। प्रतिस्पर्द्धा के बोझ ने उसके घमंड को चूर–चूर कर दिया, कर्म ही उपासना की वस्तु बन गया, कर्म पर सबसे अधिक ज़ोर दिया जाने लगा, लोग कर्म और फल की बातों पर अधिक दृढ़ हो गये।

अतः प्रेमचन्द युगीन मध्यवर्गीय समाज की दशा और उसकी दिशाएँ विचार काल की सीमा से हटकर अभी तर्क–वितर्क के मध्य बनी हुई हैं शायद यही कारण है कि प्रेमचन्द ने समाज के अन्दर फैले दमन, उत्पीड़न, ग़रीबी, शोषण, वर्ग की भावना व ईर्ष्या आदि बुराईयों का चित्रण अपने साहित्य में प्रस्तुत कर उसका तार्किक समाधान खोजने का प्रयास किया इसी कारण वश जनता उनकी ओर आकर्षित हुई। वर्तमान समय में वर्ग की दृष्टि से धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक सभी क्षेत्रों में बदलाव हो रहे हैं। विभिन्न वर्गों में भेद–भावना का विषय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बना हुआ है। रोज़गार के नये–नये अवसर मिल रहे हैं, औद्योगिक कार्य तेज़ी से हो रहा है, समाज में रोज़ नई–नई चेतना जाग्रत हो रही है, देश दिन–प्रतिदिन ऊँचाईयों की ओर बढ़ रहा है, पुराने मूल्य नये प्रतिमान की जगह ले रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप प्रेमचन्द का साहित्य आज भी प्रासांगिक और नई दिशा की ओर अग्रसर है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज की दशा और दिशा को केन्द्र में रखकर अध्ययन का आधार बनाया गया है। साथ ही प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्ग पर विचार करना इसलिए और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान समय में देश अनेक राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक आदि

समस्याओं से लड़ रहा है। आज भी रूढ़िवादी विचारधारा के लोग अपने फ़ायदे के लिए देश को वर्ग–भावना के आधार पर बाँट कर देश की सुख–शान्ति को भंग करने में लगे हुए हैं अर्थात् वे लोग वर्ग–भावना के आधार पर देश के कई हिस्से करना चाहते हैं फलस्वरूप प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज की दशा व दिशा के अध्ययन की महत्ता तथा प्रसांगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है।

प्रेमचन्द साहित्य में अब तक शोध कार्य के लिए बहुत अधिक विषय हमारे सामने आये हैं किन्तु प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्ग की दशा और दिशा को आधार बनाकर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैंने इस विषय को परखने व शोध कार्य हेतु चुना है। मेरे विचार से इस विषय पर शोध कार्य के पश्चात् और नये व महत्त्वपूर्ण तथ्य निकलकर हमारे सामने आयेंगे जो एक नई दिशा की ओर हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

अध्ययन की सुविधा को देखते हुए प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक अध्याय का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है :–

अध्याय–1 शोध–प्रबन्ध के पहले अध्याय में **'हिन्दी उपन्यासों के ऐतिहासिक विकास–क्रम'** को रेखांकित किया गया है। इस अध्याय में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी उपन्यास, उपन्यास की उत्पत्ति और उसका महत्त्व, उपन्यास की क्षेत्र विस्तृति, उपन्यास शब्द की उत्पत्ति, उपन्यास का अन्य विषयों से सम्बन्ध तथा प्रेमचन्द–पूर्व उपन्यास, प्रेमचन्द–युगीन उपन्यास, प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास व स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों का विवरण दिया गया है।

अध्याय–2 शोध–प्रबन्ध के दूसरे अध्याय **'मध्यवर्ग'** के अन्तर्गत मध्यवर्ग की परिभाषा उसकी व्याख्या व स्वरूप को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं के आधार पर मध्यवर्ग के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। ईस्ट इन्डिया कम्पनी की स्थापना के पहले तथा उसके पश्चात् मध्यवर्ग का स्वरूप क्या था। प्रस्तुत अध्याय में इस विषय पर भी चर्चा की गयी है।

अध्याय–3 शोध–प्रबन्ध के तीसरे अध्याय **'भारत में मध्यवर्ग का उदय और विकास'** में वर्णवादी व्याख्या, भारतीय सामाजिक वर्ग व सामाजिक स्तरीकरण को अध्ययन का आधार बनाया गया है। इसके अतिरिक्त पूँजीवादी देशों पर भी विचार किया गया है। सामाजिक वर्ग व सामाजिक स्तरीकरण का आधार क्या है और हम किन कसौटियों के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण का आधार बनाते हैं, प्रस्तुत अध्याय के यह प्रमुख विषय हैं। सामाजिक वर्ग के अन्तर्गत निम्नवर्ग, मध्यवर्ग व उच्चवर्ग को उनकी श्रेणी, व्यवसाय व आर्थिक साधनों के आधार पर बाँटने का भी प्रयास किया गया है।

अध्याय–4 शोध–प्रबन्ध के चौथे अध्याय **'प्रेमचन्द का युग और साहित्य'** के अन्तर्गत प्रेमचन्दयुगीन राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक व सामाजिक परिस्थितियों को रेखांकित किया गया है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप स्वतंत्रता से पहले क्या था इस विषय पर चर्चा की गयी है। भारतीय जनता सामाजिक, धार्मिक परम्पराओं व रूढ़िवादी विचारधारा से ग्रसित थी। भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा अत्यन्त दयनीय थी। दहेज–प्रथा, बहु–विवाह, सती–प्रथा, अनमेल–विवाह, पर्दा–प्रथा

आदि सामाजिक कुरीतियों ने उनके व्यक्तित्व के विकास के सभी दरवाज़ों को बन्द कर दिया था। इसके अतिरिक्त अनेकों अन्धविश्वास, तंत्र–विद्या, मूर्ति–पूजा, बहुदेव–वाद आदि प्रथाओं ने समाज को अन्दर से खोखला कर दिया था। सामाजिक व धार्मिक परिस्थितियों के अतिरिक्त राजनीतिक परिस्थितियाँ भी देश में उथल–पुथल कर रही थीं। भारत का पहला स्वाधीनता संग्राम 1857 में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ लड़ा गया किन्तु वह अंग्रेज़ों की कुशल व संगठित नीति के कारण असफ़ल हो गया। इसके बाद भी हमारे देश में राजनीतिक चेतना धीरे–धीरे पनपती रही और इसके फलस्वरूप सन् 1885 में कांग्रेस की स्थापना राजनीतिक धरातल पर एक महत्त्वपूर्ण घटना के रूप में हमारे सामने आयी। इसके पश्चात् गाँधीजी का उदय हुआ जिसके प्रवेश ने स्वाधीनता आन्दोलन को एक नई दिशा की ओर मोड़ दिया। इन सभी परिस्थितियों को प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'प्रतिज्ञा' से लेकर अन्तिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) तक सभी में रेखांकित किया है। प्रस्तुत अध्याय में उपर्युक्त सभी तथ्यों पर विचार करने का प्रयास किया गया है।

अध्याय–5 शोध–प्रबन्ध के पाँचवे अध्याय **'प्रेमचन्द के उपन्यासों में सामाजिक व राजनीतिक तत्व'** के अन्तर्गत प्रेमचन्द के राजनीतिक व सामाजिक उपन्यासों को अलग–अलग दृष्टिकोण से व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। 'सेवासदन', 'गोदान', 'ग़बन', 'निर्मला', 'वरदान', 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) आदि उपन्यासों का अध्ययन सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है। यह प्रेमचन्द द्वारा लिखित सामाजिक उपन्यास हैं। इसके अतिरिक्त राजनीतिक उपन्यासों के अन्तर्गत 'प्रेमाश्रम', 'कायाकल्प', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' आदि उपन्यासों को अध्ययन का आधार

बनाया गया है। यह प्रेमचन्द कृत राजनीतिक उपन्यास हैं। प्रस्तुत उपन्यासों का विश्लेषण सामाजिक व राजनीतिक दृष्टिकोण से मध्यवर्ग के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

अध्याय–6 शोध–प्रबन्ध के छठे अध्याय **'प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज :मानसिकता और परिवेश'** के अन्तर्गत प्रेमचन्दयुगीन मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता उसके परिवेश तथा राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक चेतना सम्पन्न समाज व सभाओं को अध्ययन का विषय बनाया गया है।

अध्याय–7 शोध–प्रबन्ध के सातवें अध्याय '**प्रेमचन्द के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग की समस्याएँ'** शीर्षक में प्रेमचन्द के 'प्रतिज्ञा', 'वरदान', 'निर्मला', 'कायाकल्प', 'गोदान', 'ग़बन', 'सेवासदन', 'कर्मभूमि', 'रंगभूमि', 'प्रेमाश्रम' व 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) आदि उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज व उसकी समस्याएँ अध्ययन का मुख्य विषय हैं। मध्यवर्गीय समाज किन–किन समस्याओं से होकर गुज़रता है, उसकी मानसिकता क्या होती है, वह किस प्रकार बाहरी जीवन, दिखावे व प्रदर्शनप्रियता की ओर सदैव आकर्षित रहता है, इन सभी बातों को प्रेमचन्द ने अपने सभी उपन्यासों में बड़ी सुन्दरता के साथ यथार्थ रूप में चित्रित किया है। जिसका अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में रेखांकित किया गया है।

अध्याय–8 शोध–प्रबन्ध के आठवें और अन्तिम अध्याय **'उपसंहार'** में प्रेमचन्द के सभी उपन्यासों का निष्कर्ष व सीमाओं का विश्लेषण मध्यवर्ग के परिपेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अन्त में ग्रन्थ–सूची के अन्तर्गत आधार ग्रन्थों, सहायक ग्रन्थों, पत्र–पत्रिकाओं, हिन्दी कोश व अंग्रेज़ी पुस्तकों की सूची दी गयी है।

अपनी शोध यात्रा आरम्भ करते समय तथा शोध यात्रा के दौरान की अनेक अविस्मरणीय अनुभूतियाँ व अनेकों कठिन परिस्थितियाँ जिनके बीच से गुज़रकर मैं इस मुक़ाम तक पहुँच पायी हूँ और जो भावात्मक रूप में सदैव मेरे साथ रहती हैं उन्हें मैं जीवन भर नहीं भूल पाऊँगी तथा वह सदैव मेरे स्मृति–पटल पर रहेंगी।

मैं अपने विभागाध्यक्ष **प्रो० एम०ई० ज़ुबैरी** व सभी गुरूजनों का हृदय से आभार प्रकट करना चाहूँगी तथा सदैव उनके प्रति कृतज्ञ रहूँगी जिनका मार्गदर्शन और दुआ मुझे सदैव शोधकार्य के लिए प्रेरित करता रहा व जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा।

अपने शोध निर्देशक **डॉ० राजीवलोचन नाथ शुक्ल** का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके निर्देशन में मैंने अपना शोधकार्य पूरा किया है। वे सदैव मेरा मार्गदर्शन करते रहे हैं।

मैं अपने (मरहूम) दादा जनाब जावेद हसन साहब (बी0ए0 अलीग 1929), (मरहूमा) दादी सोग़रा बेगम, (मरहूम) नाना जनाब आशिक़ हुसैन साहब, मेरी प्यारी नानी (मरहूमा) हसीना बेगम, बड़े मामू (मरहूम) जनाब इश्तियाक हुसैन, (मरहूम) वासिफ़ हुसैन व मोईनुल हुसैन, बड़े पापा जनाब इशरत जावेद व बड़ी मम्मी क़ैसर जहाँ सभी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने सदैव मुझे जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। मैं हृदय से आभारी हूँ अपने बड़े भाईयों सलमान जावेद, इरफ़ान जावेद व रेहान जावेद की, भाभी आबशार आफ़ताब व बहनोई डॉ0 अशफाक़ भाई व मतीउर्रहमान भाई की, जो हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाते रहे व जिनका स्नेह सदैव मेरे साथ रहा, साथ ही मेरे हृदय में कुछ सुन्दर अनुभूतियाँ मेरे

प्यारे भतीजे मोहम्मद अनस, मोहम्मद उमर व भान्जे मोहम्मद अम्मार व मोहम्मद अफ़्फ़ान के रूप में सदैव मेरे साथ रही।

मेरी आदर्श प्यारी बड़ी बहन शीबा जिनका प्रेम, सहयोग व ममता भरा स्नेह हमेशा मेरे साथ रहा और मेरी प्रेरणा व प्रोत्साहन बनता रहा। शोध–यात्रा के सफ़र की सभी सुन्दर अनुभूतियाँ मैं उनके साथ हमेशा बाँटना चाहूँगी।

इनके अतिरिक्त मैं अपने सभी विभागीय मित्रों प्रेरणा, आयशा, फरहा आपा, आरती, प्रियंका, ध्रुव, कपिल, दौलत व अपने विभागीय वरिष्ठों खुर्शीद भाई, महताब भाई और अन्य सभी मित्रों के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिनका मित्रवत् स्नेह हमेशा मेरे साथ रहा और मुझे सदैव जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा। साथ ही मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ मो0 अकरम, तनवीर, तशकील, अरीब, शुमाउल, शाहहुसैन भाई व यूसुफ़ का जिन्होंने हमेशा मेरी हौसला अफज़ाई की और जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

मैं हृदय से आभारी हूँ अपने उन शिक्षकों के प्रति जिन्होंने मुझे पेन्सिल से पेन पकड़ने तक का सफ़र तय कराया। मेरे स्कूल एम0सी0एम0 स्कूल बलरामपुर के सभी शिक्षक व शिक्षिकाओं का मैं तहेदिल से आभार व्यक्त करती हूँ। उस समय की सभी सुन्दर अनुभूतियाँ सदैव मेरे हृदय में विद्यमान रहेंगी।

मैं हिन्दी–विभाग में कार्यरत श्रीमती परवेज़ फातिमा बाजी, श्री मिर्ज़ा शकील बेग, श्री बशारत अली, मो0 सलमान साहब, श्री अब्दुल वहाब, श्री अब्दुल जावेद व

विभागीय पुस्तकालय प्रभारी श्री मो0 सैय्यद माज़ के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। शोध यात्रा के दौरान इन सभी लोगों का स्नेह मेरे साथ रहा।

शोध यात्रा के दौरान शोध सामग्री एकत्र करने व संचयन में अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के मौलाना आज़ाद लाइब्रेरी का महत्त्वपूर्ण सहयोग है। लाइब्रेरी में कार्यरत श्री पीर मोहम्मद, श्री नदीम अहमद के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करना चाहूँगी। इसके अतिरिक्त शोध सामग्री के संचयन में मैं महारानी लाल कुँवरी स्नातकोत्तर महाविद्यालय बलरामपुर, श्री लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय गोण्डा व लखनऊ विश्वविद्यालय का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं श्री जसीम अख़्तर बेग भाई व गुलज़ार भाई के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूँगी जिन्होंने पूरी रुचि व अच्छे व्यवहार के साथ इस शोध–प्रबन्ध के शुद्ध व सुन्दर कम्प्यूटर मुद्रण द्वारा मेरी सहायता की।

अन्त में, मैं उन लेखकों व विद्वानों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों व लेखों ने मेरे शोध कार्य को पूरा करने में सहायता की और मेरे ज्ञान को बढ़ाया। ध्यानपूर्वक शोधकार्य करने के बाद भी जहाँ कहीं वर्तनीगत अशुद्धियाँ या कोई त्रुटि रह गयी हो तो उसके लिए मैं क्षमा चाहूँगी। मैंने अपने शोधकार्य को मौलिक व अच्छा बनाने की हर मुमकिन कोशिश की है। मेरा यह शोधकार्य यदि प्रेमचन्द साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन में कुछ नयी कड़ियाँ जोड़ सका तो मैं अपनी मेहनत को कामयाब समझूँगी।

अस्मा जावेद